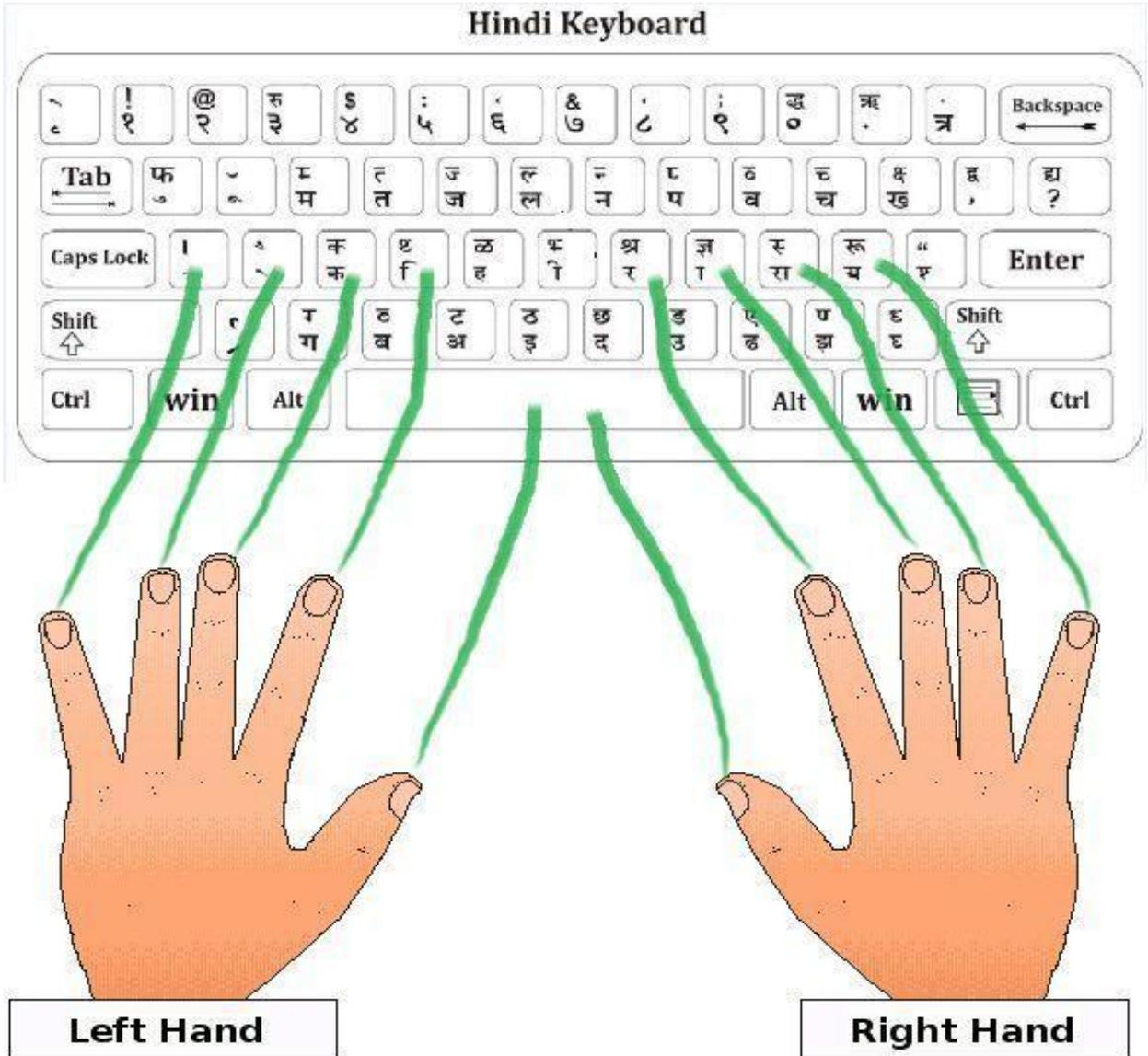


पाठ 1 : हिन्दी टंकण का बुनियाद प्रषिक्षण।

Keyboard पर उँगलियों को रखना :-

हिन्दी एवं अँग्रेजी टाईपिंग में उँगलियों को समान प्रकार से ही निचे चित्र क. 01 में दर्शाएँ अनुसार Keyboard की Home Row Keys पर रखा जाता है। हमेशा इन्हीं उँगलियों को अन्य अक्षर/अंक टाईप करने के लिए उस Key को दबाने के बाद पुनः पुर्वानुसार Home Row Keys पर ही रखते है।



चित्र क. 01

पाठ 2 : Home Row Keys का अभ्यास।

निर्देश :- निम्न अक्षरों को चित्र क. 01 में दर्शाएँ अनुसार उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह ि श
य स ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ
ह ि श य स ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह ि श य स
ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह ि श य स ा र क िँ ह
ि श य स ा र क िँ ह ि श य स ा र

पाठ 3 : Home Row के सरल शब्दों का अभ्यास।

निर्देश :- निम्न शब्दों को चित्र क. 01 में दर्शाएँ अनुसार उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

कह कस सर हर कर किस सिर शीश सह हीरा सारा कार काश
काक हास हार हीर हीरा यार राह काही कोरा होश सारी रिहा
राहीसारी सही कसी शकर सोहर शिकार शिकारी कहिस कहिये
रहियेरोकिये सहाय सारिका सहारा कहार कह कस सर हर कर
किस सिरशीश सह हीरा सारा कार काश काक हास हार

पाठ 6 : Upper Rows के 12 अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर Upper Rows keys के साथ 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

मत जल चख पच कन चना चार पान मान खान नाम पाप चमन जलन खलन
चखत मजाल सजाल चपाती नानी तीरथ भरनी करनी खजाना नमस्ते
भरपूर जनमत करतव नमकीन चमकीला मलीनता कमीनता खलभरी नमकीना
महकना चहकना मनमाना मनमानी करामाती जलजीरा मलमल मामाजी मत जल
चख पचकन चना चार पान मान

पाठ 7 : Shift + Upper Row के अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर Shift Key के साथ Upper Rows keys का 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल
क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च ट ए
नँ म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त
ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च ट ए नँ म त ज ल क्ष च
ट ए न

पाठ 8 : Bottom Rows के 8 अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर Bottom Row Keys के साथ 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब
अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ
ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए
ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए
उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ
द , ग ब अ इ ऋ ए उ द , ग ब अ इ ऋ ए उ द

पाठ 9 : Bottom Row के 10 अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर Bottom Row Keys के साथ 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

ग्रह अब ब्रज धन धू अक्ष ध्यान इकाइ उदय मलय ऐनक सकल ब्रोकेन
एकाग्र ग्रहण उधर इधर एकाग्रता उकसाना अब तक अधिकार अध्याय
अधिभार अध्यादेश कब्रगाह रामायण नारायण धन्यवाद अबरार अजगर
बरगद श्रवणीय रमणीय अनुकरण अनुसरण उपग्रह अम्बरीय एकाएक
धनवान धनहीन जीवन कबीर अबरार कराना धरना अभिकरण अनुराग

POLICE RADIO TRAINING SCHOOL, INDORE (M.P.)

पाठ 10 : Shift + Bottom Row के अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर Shift Key के साथ Bottom Row Keys का 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग
ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट
ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ
ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ
ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड
छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ ' ग ङ ट ठ ढ झ ढ ड छ

पाठ 11 : All Rows के अक्षरों का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर All Rows Characters का 04 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

झरना ठहाका ठठेरा राजेन्द्र ठिकाना ठहाका गब्बर ग्यारह छब्बन छप्पन
छहरना झरझर टमटम टर्टर ठाटबाट ढकोसला ढक्कन ढपोल शंख
रग्धूलाल घमण्डी घसियारा घासीराम घटाटोप गुरुघण्टाल ग्वालटोली
ग्नानियुक्त ग्यारह म्यानसागर ग्यानचौकी ग्यानज्योति छिछोरा घनानन्द
घनचक्कर घनाक्षरी धनधर्माड दर्पयुक्त झञ्झराना झण्डावाला कण्डावाला
माण्डावाला तुलसीराम मनालीराम भगतलाल भँवरीलाल भवानीमण्डी पाखण्डी
कर्मयोगी धर्मराज युधिष्ठिर कालभैरव कालखण्ड महिसागर महिषासुर
महानुभव महाभियोग महानुभव मरणासन्न जीवनपर्यंत जरासंध दुर्योधन

पाठ 14 : Paragraph का अभ्यास।

निर्देश :- उँगलियों को Home Row Keys पर रखकर निम्नानुसार चारों पेज 02-02 दिनों तक रोजाना एक घंटे टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकेन्ड पर हुआ। भुवनेश्वरी देवी के विश्वविजयी पुत्र का स्वागत मंगल शंख बजाकर मंगल ध्वनी से किया गया। ऐसी महान विभूती के जन्म से भारत माता भी गौरवान्वित हुईं। बालक की आकृति एवं रूप बहुत कुछ उनके सन्यासी पितामह दुर्गादास की तरह था। परिवार के लोगों ने बालक का नाम दुर्गादास रखने की इच्छा प्रकट की, किन्तु माता द्वारा देखे स्वपन के आधार पर बालक का नाम वीरेश्वर रखा गया। प्यार से लोग 'बिले' कह कर बुलाते थे। हिन्दू मान्यता के अनुसार संतान के दो नाम होते हैं, एक राशी का एवं दूसरा जन साधारण में प्रचलित नाम, तो अन्नप्रासन के शुभ अवसर पर बालक का नाम नरेन्द्र नाथ रखा गया।

नरेन्द्र की बुद्धी बचपन से ही तेज थी। बचपन में नरेन्द्र बहुत नटखट थे। भय, फटकार या धमकी का असर उन पर नहीं होता था। तो माता भुवनेश्वरी देवी ने अदभुत उपाय सोचा, नरेन्द्र का अशिष्ट आचरण जब बढ जाता तो, वो शिव शिव कह कर उनके ऊपर जल डाल देतीं। बालक नरेन्द्र एकदम शान्त हो जाते। इसमें संदेह नही की बालक नरेन्द्र शिव का ही रूप थे। माँ के मुहँ से रामायण महाभारत के किस्से सुनना नरेन्द्र को बहुत अच्छा लगता था। बालयावस्था में नरेन्द्र नाथ को गाड़ी पर घूमना बहुत पसन्द था। जब कोई पूछता बडे हो कर क्या बनोगे तो मासूमियत से कहते कोचवान बनूँगा। पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखने वाले पिता विश्वनाथ दत्त अपने पुत्र को अंग्रेजी शिक्षा देकर पाश्चात्य सभ्यता में रंगना चाहते थे। किन्तु नियती ने तो कुछ खास प्रयोजन हेतु बालक को अवतरित किया था।

ये कहना अतिशयोक्ती न होगा कि भारतीय संस्कृती को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वो हैं स्वामी विवेकानंद। व्यायाम, कुश्ती, क्रिकेट आदी में नरेन्द्र की विशेष रूची थी। कभी कभी मित्रों के साथ हास-परिहास में भी भाग लेते। जनरल असेम्बली कॉलेज के अध्यक्ष विलयम हेस्टी का कहना था कि नरेन्द्रनाथ दर्शन शास्त्र के अतिउत्तम छात्र हैं। जर्मनी और इंग्लैण्ड के सारे विश्वविद्यालयों में नरेन्द्रनाथ जैसा मेधावी छात्र नहीं है। नरेन्द्र के चरित्र में जो भी महान है, वो उनकी सुशिक्षित एवं विचारशील माता की शिक्षा का ही परिणाम है।

नरेन्द्र को बचपन से ही परमात्मा को पाने की चाह थी। डेकार्ट का अंहवाद, डार्विन का विकासवाद, स्पेंसर के अद्वैतवाद को सुनकर नरेन्द्रनाथ सत्य को पाने का लिये व्याकुल हो गये। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ती हेतु ब्रह्मसमाज में गये किन्तु वहाँ उनका चित्त शान्त न हुआ। रामकृष्ण परमहंस की तारीफ सुनकर नरेन्द्र उनसे तर्क के उद्देश्य से उनके पास गये किन्तु उनके विचारों से प्रभावित हो कर उन्हें गुरु मान लिया। परमहंस की कृपा से उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ। नरेन्द्र परमहंस के प्रिय शिष्यों में से सर्वोपरि थे। 25 वर्ष की उम्र में नरेन्द्र ने गेरुवावस्त्र धारण कर सन्यास ले लिया और विश्व भ्रमण को निकल पड़े।

1893 में शिकागो विश्व धर्म परिषद में भारत के प्रतीनिधी बनकर गये किन्तु उस समय युरोप में भारतीयों को हीन दृष्टी से देखते थे। उगते सूरज को कौन रोक पाया है, वहाँ लोगों के विरोध के बावजूद एक प्रोफेसर के प्रयास से स्वामी जी को बोलने का अवसर मिला। स्वामी जी ने बहिनों एवं भाईयों कहकर श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामी जी के मुख से ये शब्द सुनकर करतल ध्वनी से उनका स्वागत हुआ। श्रोता उनको मंत्र मुग्ध सुनते रहे निर्धारित समय कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष गिबन्स के अनुरोध पर स्वामी जी आगे बोलना शुरू किये तथा 20 मिनट से अधिक बोले। उनसे अभिभूत हो हज़ारों लोग उनके शिष्य बन गये। आलम ये था कि जब कभी सभा में शोर होता तो उन्हें स्वामी जी के भाषण सुनने का प्रलोभन दिया जाता सारी जनता शान्त हो जाती।

अपने व्यख्यान से स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि हिन्दु धर्म भी श्रेष्ठ है, उसमें सभी धर्मों समाहित करने की क्षमता है। इस अदभुत सन्यासी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृती की ध्वजा को फ़ैराया। स्वामी जी केवल संत ही नहीं देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक एवं मानव प्रेमी थे। 1899 में कोलकता में भीषण प्लेग फैला, अस्वस्थ होने के बावजूद स्वामी जी ने तन मन धन से महामारी से ग्रसित लोगों की सहायता करके इंसानियत की मिसाल दी। स्वामी विवेकानंद ने, 1 मई, 1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन, दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्मयोग मानता है जो कि हिन्दुत्व में प्रतिष्ठित एक महत्वपूर्ण सिध्दान्त है। 39 वर्ष के संक्षिप्त जीवन काल में स्वामी जी ने जो अदभुत कार्य किये हैं, वो आने वाली पिढीयों को मार्ग दर्शन करते रहेंगे। 4 जुलाई 1902 को स्वामी जी का अलौकिक शरीर परमात्मा में विलीन हो गया। स्वामी जी का आदर्श- "उठो जागो और तब तक न रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए" अनेक युवाओं के लिये प्रेरणा स्रोत है। स्वामी विवेकानंद जी का जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी शिक्षा में सर्वोपरी शिक्षा है "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।"

जो नित्य एवं स्थाई प्रतीत होता है, वह भी विनाशी है। जो महान प्रतीत होता है, उसका भी पतन है। जहाँ संयोग है वहाँ विनाश भी है। जहाँ जन्म है वहाँ मरण भी है। ऐसे सारस्वत सच विचारों को आत्मसात करते हुए महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की जो विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है।

विश्व के प्रसिद्ध धर्म सुधारकों एवं दार्शनिकों में अग्रणी महात्मा बुद्ध के जीवन की घटनाओं का विवरण अनेक बौद्ध ग्रन्थ जैसे- ललितबिस्तर, बुद्धचरित, महावस्तु एवं सुत्तनिपात से ज्ञात होता है। भगवान बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी वन में 563 ई.पू. में हुआ था। आपके पिता शुद्धोधन शाक्य राज्य कपिलवस्तु के शासक थे। माता का नाम महामाया था जो देवदह की राजकुमारी थी। महात्मा बुद्ध अर्थात् सिद्धार्थ (बचपन का नाम) के जन्म के सातवें दिन माता महामाया का देहान्त हो गया था, अतः उनका पालन-पोषण उनकी मौसी व विमाता प्रजापति गौतमी ने किया था।

सिद्धार्थ बचपन से ही एकान्तप्रिय, मननशील एवं दयावान प्रवृत्ति के थे। जिस कारण आपके पिता बहुत चिन्तित रहते थे। उपाय स्वरूप सिद्धार्थ की 16वर्ष की आयु में गणराज्य की राजकुमारी यशोधरा से शादी करवा दी गई। विवाह के कुछ वर्ष बाद एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया। समस्त राज्य में पुत्र जन्म की खुशियां मनाई जा रही थी लेकिन सिद्धार्थ ने कहा, आज मेरे बन्धन की श्रृंखला में एक कड़ी और जुड़ गई। यद्यपि उन्हें समस्त सुख प्राप्त थे, किन्तु शान्ति प्राप्त नहीं थी। चार दृश्यों (वृद्ध, रोगी, मृतव्यक्ति एवं सन्यासी) ने उनके जीवन को वैराग्य के मार्ग की तरफ मोड़ दिया। अतः एक रात पुत्र व अपनी पत्नी को सोता हुआ छोड़कर गृह त्यागकर ज्ञान की खोज में निकल पड़े।

गृह त्याग के पश्चात सिद्धार्थ मगध की राजधानी राजगृह में अलार और उद्रक नामक दो ब्राह्मणों से ज्ञान प्रप्ति का प्रयत्न किये किन्तु संतुष्टि नहीं हुई। तदपश्चात निरंजना नदी के किनारे उरवले नामक वन में पहुँचे, जहाँ आपकी भेंट पाँच ब्राह्मण तपस्वियों से हुई। इन तपस्वियों के साथ कठोर तप किये परन्तु कोई लाभ न मिल सका। इसके पश्चात सिद्धार्थ गया (बिहार) पहुँचे, वहाँ वह एक वट वृक्ष के नीचे समाधी लगाये और प्रतिज्ञा की कि जबतक ज्ञान प्राप्त नहीं होगा, यहाँ से नहीं हटूँगा। सात दिन व सात रात समाधिस्थ रहने के उपरान्त आठवें दिन बैशाख पूर्णिमा के दिन आपको सच्चे ज्ञान की अनुभूति हुई। इस घटना को “सम्बोधि” कहा गया। जिस वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था उसे “बोधि वृक्ष” तथा गया को “बोध गया” कहा जाता है।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महात्मा बुद्ध सर्वप्रथम सारनाथ (बनारस के निकट) में अपने पूर्व के पाँच सन्यासी साथियों को उपदेश दिये। इन शिष्यों को “पंचवगीर्य” कहा गया। महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये इन उपदेशों की घटना को ‘धर्म-चक्र-प्रवर्तन’ कहा जाता है। भगवान बुद्ध कपिलवस्तु भी गये। जहाँ उनकी पत्नी, पुत्र व अनेक शाक्यवंशिय उनके शिष्य बन गये। बौद्ध धर्म के उपदेशों का संकलन ब्राह्मण शिष्यों ने त्रिपिटकों के अंतर्गत किया। त्रिपिटक संख्या में तीन हैं-

1-विनय पिटक, 2-सुत्त पिटक, 3- अभिधम्म पिटक

इनकी रचना पाली भाषा में की गई है। हिन्दू-धर्म में वेदों का जो स्थान है, बौद्ध धर्म में वही स्थान पिटकों का है।

भगवान बुद्ध के उपदेशों एवं वचनों का प्रचार प्रसार सबसे ज्यादा सम्राट अशोक ने किया। कलिंग युद्ध में हुए नरसंहार से व्यथित होकर अशोक का हृदय परिवर्तित हुआ उसने महात्मा बुद्ध के उपदेशों को आत्मसात करते हुए इन उपदेशों को अभिलेखों द्वारा जन-जन तक पहुँचाया। भीमराव आम्बेडकर भी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

महात्मा बुद्ध आजीवन सभी नगरों में घूम-घूम कर अपने विचारों को प्रसारित करते रहे। भ्रमण के दौरान जब वे पावा पहुँचे, वहाँ उन्हें अतिसार रोग हो गया था। तदपश्चात कुशीनगर गये जहाँ 483 ई.पू. में बैशाख पूर्णिमा के दिन अमृत आत्मा मानव शरीर को छोड़ ब्रह्माण्ड में लीन हो गई। इस घटना को ‘महापरिनिर्वाण’ कहा जाता है। महात्मा बुद्ध के उपदेश आज भी देश-विदेश में जनमानस का मार्ग दर्शन कर रहे हैं। भगवान बुद्ध प्राणी हिंसा के सख्त विरोधी थे। उनका कहना था कि,

“जैसे मैं हूँ, वैसे ही वे हैं, और जैसे वे हैं, वैसे ही मैं हूँ। इस प्रकार सबको अपने जैसा समझकर न किसी को मारें, न मारने को प्रेरित करें।”

भगवान् बुद्ध के सुविचारों के साथ ही मैं अपनी कलम को विराम देना चाहूंगी , “हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो परछाई की तरह ही प्रसन्नता उसका साथ कभी नहीं छोड़ती।”

पाठ 15 : आवेदन / पत्र लिखने का अभ्यास।

निर्देश :- निम्नानुसार आवेदन को रोजाना एक घंटे 02 दिनों तक टाईप कर टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

सेवा में,

श्रीमान पुलिस अधीक्षक (रेडियो) महोदय,
इन्दौर झौन, इन्दौर,

द्वारा :- उचित माध्यम।

विषय :- 03 दिवस आकस्मिक अवकाष दि. 2-4 जुन 2012 का स्वीकृत करने बाबत्।

महोदय,

सविनय विनम्र निवेदन है, कि प्रार्थी को अपने घर पर बारिष पूर्व कुछ मरम्मत कार्य करवाना है। जिसके लिए अवकाष की आवश्यकता है।

अतः श्रीमानजी से अनुरोध है कि प्रार्थी का 03 दिवस आकस्मिक अवकाष दिनांक 2-4 जुन 2015 का स्वीकृत करने की कृपा करें।

यहीं विनय है।

नोट :- दि. 01.07.15 के अपरान्हः से अवकाष पर जाना चाहता है।

प्रार्थी

(सुनील कुमार)
आरक्षक (रेडियो)
इन्दौर झौन, इन्दौर,

POLICE RADIO TRAINING SCHOOL, INDORE (M.P.)

निर्देश :- निम्नानुसार पत्र को रोजाना एक घंटे 02 दिनों तक टाईप कर टाईपिंग का अभ्यास किजिए।

कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक/निदेशक, पुलिस रेडियो ट्रेनिंग स्कूल, इंदौर.

क्रमांक - पी.आर.टी.एस./इं./कोर्स/ /2013, दिनांक - / /13

प्रति,

जिला अभियोजन अधिकारी,
इन्दौर (म.प्र.)

विषय :- एक सहायक जिला अभियोजन अधिकारी को अतिथि व्याख्यान देने हेतु भेजने बाबत।

कृपया उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि पुलिस रेडियो प्रशिक्षण शाला, इन्दौर में परिवीक्षाधीन उप निरीक्षकों के लिए सायबर कार्डम केप्सूल कोर्स संचालित किया जा रहा है।

उक्त कोर्स में आई.टी. एक्ट विषय पर अतिथि व्याख्यान देने हेतु एक सहायक जिला अभियोजन अधिकारी को दिनांक 18/04/13 के समय 09:30 बजे से अतिथि व्याख्यान देने हेतु भेजा जाना सुनिश्चित करें।

निदेशक (पु.म.नि.),
पुलिस रेडियो प्रशिक्षण शाला, इन्दौर

POLICE RADIO TRAINING SCHOOL, INDORE (M.P.)

पाठ 16 : हिन्दी फोन्ट Kruti Dev 010 के विशेष अक्षर।

| क.सं. | अक्षर | कोड | क.सं. | अक्षर | कोड |
|-------|-------|---------|-------|-------|---------|
| 1 | ! | Alt+033 | 34 | ट | Alt+066 |
| 2 | ॢ | Alt+034 | 35 | ठ | Alt+067 |
| 3 | ॣ | Alt+035 | 36 | ड | Alt+068 |
| 4 | + | Alt+036 | 37 | ॢ | Alt+069 |
| 5 | : | Alt+037 | 38 | ॣ | Alt+070 |
| 6 | - | Alt+038 | 39 | ळ | Alt+071 |
| 7 | ॡ | Alt+039 | 40 | ॠ | Alt+072 |
| 8 | ; | Alt+040 | 41 | ॡ | Alt+073 |
| 9 | ॢ | Alt+041 | 42 | ॢ | Alt+074 |
| 10 | . | Alt+042 | 43 | ॣ | Alt+075 |
| 11 | , | Alt+043 | 44 | । | Alt+076 |
| 12 | । | Alt+044 | 45 | ॥ | Alt+077 |
| 13 | ॥ | Alt+045 | 46 | ० | Alt+078 |
| 14 | ० | Alt+046 | 47 | ॠ | Alt+079 |
| 15 | ॠ | Alt+047 | 48 | ॡ | Alt+080 |
| 16 | ॡ | Alt+048 | 49 | ॢ | Alt+081 |
| 17 | ॢ | Alt+049 | 50 | ॣ | Alt+082 |
| 18 | ॣ | Alt+050 | 51 | । | Alt+083 |
| 19 | । | Alt+051 | 52 | ॥ | Alt+084 |
| 20 | ॥ | Alt+052 | 53 | ० | Alt+085 |

| क.सं. | अक्षर | कोड | क.सं. | अक्षर | कोड |
|-------|-------|----------|-------|-------|----------|
| 67 | ब | Alt+099 | 100 | ॡ | Alt+0135 |
| 68 | क | Alt+0100 | 101 | ॢ | Alt+0136 |
| 69 | ख | Alt+0101 | 102 | ॣ | Alt+0137 |
| 70 | ॣ | Alt+0102 | 103 | । | Alt+0138 |
| 71 | ड | Alt+0103 | 104 | ॥ | Alt+0139 |
| 72 | । | Alt+0104 | 105 | ० | Alt+0140 |
| 73 | ॥ | Alt+0105 | 106 | ॠ | Alt+0145 |
| 74 | ० | Alt+0106 | 107 | ॡ | Alt+0146 |
| 75 | ॠ | Alt+0107 | 108 | ॢ | Alt+0147 |
| 76 | ॡ | Alt+0108 | 109 | ॣ | Alt+0148 |
| 77 | ॢ | Alt+0109 | 110 | । | Alt+0150 |
| 78 | ॣ | Alt+0110 | 111 | ॥ | Alt+0151 |
| 79 | । | Alt+0111 | 112 | ० | Alt+0152 |
| 80 | ॥ | Alt+0112 | 113 | ॠ | Alt+0153 |
| 81 | ० | Alt+0113 | 114 | ॡ | Alt+0155 |
| 82 | ॠ | Alt+0114 | 115 | ॢ | Alt+0159 |
| 83 | ॡ | Alt+0115 | 116 | ॣ | Alt+0160 |
| 84 | ॢ | Alt+0116 | 117 | । | Alt+0161 |
| 85 | ॣ | Alt+0117 | 118 | ॥ | Alt+0162 |
| 86 | । | Alt+0118 | 119 | ० | Alt+0163 |

| | | | | | |
|----|---|---------|----|---|---------|
| 21 | 5 | Alt+053 | 54 | ॠ | Alt+086 |
| 22 | 6 | Alt+054 | 55 | ॡ | Alt+087 |
| 23 | 7 | Alt+055 | 56 | ॢ | Alt+088 |
| 24 | 8 | Alt+056 | 57 | ॣ | Alt+089 |
| 25 | 9 | Alt+057 | 58 | । | Alt+090 |
| 26 | ॠ | Alt+058 | 59 | ॥ | Alt+091 |
| 27 | ॡ | Alt+059 | 60 | ० | Alt+092 |
| 28 | ॢ | Alt+060 | 61 | ॠ | Alt+093 |
| 29 | ॣ | Alt+061 | 62 | ॡ | Alt+094 |
| 30 | । | Alt+062 | 63 | ॢ | Alt+095 |
| 31 | ॥ | Alt+063 | 64 | ॣ | Alt+096 |
| 32 | ० | Alt+064 | 65 | । | Alt+097 |
| 33 | ॠ | Alt+065 | 66 | ॥ | Alt+098 |

| | | | | | |
|----|---|----------|-----|---|----------|
| 87 | ० | Alt+0119 | 120 | ॠ | Alt+0164 |
| 88 | ॠ | Alt+0120 | 121 | ॡ | Alt+0165 |
| 89 | ॡ | Alt+0121 | 122 | ॢ | Alt+0167 |
| 90 | ॢ | Alt+0122 | 123 | ॣ | Alt+0168 |
| 91 | ॣ | Alt+0123 | 124 | । | Alt+0169 |
| 92 | । | Alt+0124 | 125 | ॥ | Alt+0170 |
| 93 | ॥ | Alt+0125 | 126 | ० | Alt+0171 |
| 94 | ० | Alt+0126 | 127 | ॠ | Alt+0174 |
| 95 | ॠ | Alt+0130 | 128 | ॡ | Alt+0177 |
| 96 | ॡ | Alt+0131 | 129 | ॢ | Alt+0179 |
| 97 | ॢ | Alt+0132 | 130 | ॣ | Alt+0180 |
| 98 | ॣ | Alt+0133 | 131 | । | Alt+0182 |
| 99 | । | Alt+0134 | 132 | ॥ | Alt+0183 |

----- 000 -----

POLICE RADIO TRAINING SCHOOL, INDORE (M.P.)